श्रीरामचरितमानस में वर्णित स्त्री की उपादेयता

21

सुधांशु प्रकाश शुक्ल
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद, (उ0प्र0)
एम. जे. पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली (उ0प्र0)
ईमेलः sudhanshu.hep@gmail.com

प्रो0 (डॉ.) वन्दना पाण्डेय
शोध निर्देशिका (हिन्दी विभाग)
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद, (उ0प्र0)
एम. जे. पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली (उ0प्र0)
ईमेलः vandanalok2004@gmail.com

सारांश

भक्तिकालीन कवियों ने समाज को कुरीतियों, अनाचारों तथा धार्मिक पतन से निवृत्ति के लिए ईशोपासक काव्य की सर्जना की। उन्होंने अपने काव्य–साहित्य के माध्यम से समाज के मुख्य आधार–स्तम्भ स्त्री व पुरुष दोनों को सद्मार्ग दिखाते हुए उच्च आदर्शों के पालन हेतु चेतना जगाई। महाकवि तुलसी ने सगुण–निर्गुण धारा को एकीकृत करते हुए सुसुप्त सनातन संस्कृति को मानस रूपी काव्य के माध्यम से झंकृत किया। फलतः निःसहाय हो चुके हिन्दू जनसमूह के मन–मस्तिष्क में अप्रतिम साहस और दृढ़ता का संचार हुआ। पुरुषों के साथ स्त्रियों में भी शनैः–शनैः स्वास्मिता और आन–बान–शान के रक्षार्थ चेतना जाग्रत होने लगी और वे आतताइयों के समूल नाश को उद्यत हुईं। असहाय मध्ययुगीन नारी अपने खोए हुए वैभव व स्वत्व के लिए डटकर खड़ी हुई। रानी दुर्गावती, रानी कर्णावती, महा वीरांगना सारन्धा, रानी चेन्नमा आदि अनगिनत उदाहरण इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरित हैं जिन्होंने अपने बल तथा पराक्रम से शत्रुओं को अपने पैरों तले रौंदते हुए स्वराज को रक्षित कर नव कीर्तिमान गढ़े।

मुख्य शब्द

स्त्री–चेतना, निवृत्ति, सर्जना, सगुण–निर्गुण धारा, सनातन संस्कृति, स्वास्मिता, मध्ययुगीन, स्वराज आदि।

प्रस्तावना

सनातन साहित्य में श्रीरामचरितमानस का मूर्धन्य स्थान है। अखिल विश्व की चराचर सृष्टि में प्रभु श्रीराम रचे बसे हैं। तुलसी काव्य में नारी चेतना बृहत्तम् रूप में पाई जाती है। महाकवि ने नारी को वन्दनीया तथा आदिशक्ति से सम्बोधित किया है। मार्कण्डेय पुराण के अन्तर्गत स्त्री को शक्ति का असीम पुंज बताया गया है जिसने भयानक आसुरी शक्तियों से चराचर जगत की रक्षा की। शक्तिस्वरूपा ने असुरों की सेना का समूल नाश कर सृष्टि को निर्भय किया।

ऊँ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघांछूलं भुशुण्डीं शिरः
शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।[1]

श्रीरामचरितमानस में स्त्री की उपादेयता

तुलसी ने स्त्री की महत्ता को स्वीकार करते हुए महाकाव्य की शुरुआत सम्पूर्ण सृष्टि की सर्जक मातृशक्ति, ज्ञानदायिनी व ज्ञानस्वरूपा माँ सरस्वती की वन्दना से ही की है। महाकवि ने स्त्री के सभी पक्षों पर प्रकाश डालते हुए उसे अपना उद्धारक भी कहा है तथा स्तुति द्वारा अपने ज्ञान वर्द्धन की कामना की है। यथा–

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।
भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम्।।[2]

तुलसी स्त्री को सर्वशक्तिमती तथा सर्वगुणसम्पन्ना मानते हैं। वह कहते हैं कि माता सीता उत्पत्ति, स्थिति पालन और संहारक रूप में स्तुत्य हैं, जो कि उनकी स्त्री सम्यक् चेतना को दर्शाता है। यथा–

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्।।[3]

तुलसी दार्शनिक दृष्टि से प्रकृति और पुरुष के सह–अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। मानस में स्त्री प्रकृति रूप में पुरुष के वामांग में अर्द्धासन पर सुशोभित है तथा पुरुष की शक्ति रूप से उद्बोधित की जाती है। पुरुष और प्रकृति के संयुक्त स्वरूप को ही मायापति राम के नाम से सम्बोधित किया गया है जो विशुद्ध परमात्मा, संसार के संचालक तथा इस भव रूपी संसार सागर से पार जाने के लिए एकमात्र सहारा हैं। महाकवि मानस में श्रीसरयू जी, माता सीता, माता कौशल्या का वर्णन समस्त पापों की शामक व सुख समृद्धि प्रदाता के रूप में करते हैं जिनके दर्शन मात्र से पापियों को मुक्ति मिल जाती है। यह स्त्री की चिर चिरन्तन लोक कल्याणकारी क्षमता का परिचायक है। यथा–

बंदउँ अवध पुरी अति पावनि।
सरजू सरि कलि कलुष नसावनि।।
प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी।
ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी।।
सिय निंदक अघ ओघ नसाए।
लोक बिसोक बनाई बनाए।।
बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची।
कीरति जासु सकल जग माची।।[4]

तुलसी मानस में स्त्री चेतना को माता सीता के लौकिक एवं अलौकिक गुणों के रूप में विश्लेषित करते हैं। वह सीता को जगत जननी, रघुवर की प्रियतमा जैसी संज्ञाओं से विभूषित करते हैं और स्वयं माता के चरण कमलों की वन्दना मात्र से निर्मल बुद्धि प्राप्त करते हैं। इस प्रकार तुलसी ने स्त्री को सर्वाधिक महत्ता प्रदान करते हुए सकल गुणों व निधियों की प्रदाता बताकर स्तुति की है जो कि निश्चित ही आलोचकों के लिए एक चिन्तन का विषय हो सकता है क्योंकि वह तुलसी की नारी सम्यक् चेतना को सदैव अपनी सस्ती लोकप्रियता के चश्मे से देखने का प्रयास करते रहे हैं। प्रख्यात आलोचकों में डॉ नगेन्द्र, मिश्रबन्धु व माताप्रसाद गुप्त आदि ने तुलसी को नारी चिन्तन में अनुदार ही कहा है जबकि उनके नारी चित्रण को आधार मानकर एक प्रगतिशील व खुशहाल समाज की स्थापना की जा सकती है। तुलसी का मत है कि जो नारी स्त्रीत्व गुणों से युक्त होगी, उसके हृदय में त्याग, सेवा, दया, ममता, कर्त्तव्यपरायणता, नारी सम्बन्धी सम्पूर्ण शील व मर्यादा से आवेष्टित दिव्यता की कल्याणकारी भावना विद्यमान होगी। वह नारी श्रेष्ठता को प्राप्त कर देवत्व की श्रेणी प्राप्त करेगी। यथा–

जनकसुता जग जननि जानकी।
अतिसय प्रिय करुनानिधान की।।
ताके जुग पद कमल मनावउँ।
जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ।।[5]

महाकवि तुलसी ने मध्यकालीन विकृतियों से स्त्री को सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से ही उसको मर्यादा में रहने का सन्देश दिया है। तुलसीदास जी स्त्री के उच्च आदर्शों को अत्यन्त सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। वह कहते हैं कि स्त्री को अपने सहचर से कभी भी छल नहीं करना चाहिए, क्योंकि पति–पत्नी संयुक्त रूप से आत्मा–परमात्मा का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। तुलसी ने माता सती द्वारा शम्भु के वचनों को अविश्वसनीय मानकर प्रभु राम की परीक्षा लेने के लिए माता सीता का छद्म वेश धारण करने को भयंकर विपदा का कारण बताया है और प्रभु द्वारा माता सती को सीता के छद्म वेश में भी माता कहकर सम्बोधित करना नारी की श्रेष्ठता को ही स्थापित करता है। शिव द्वारा मात्र माता सीता का छद्म वेश धारित करने के कारण सती को पत्नी के रूप में स्वीकार करना असम्भव हो गया जो कि उनकी माता सीता के प्रति अनन्य भक्ति को दर्शाता है। यथा–

सतीं कीन्ह सीता कर बेषा।
सिव उर भयउ बिषाद बिसेषा।।
जौं अब करउँ सती सन प्रीती।
मिटइ भगति पथु होइ अनीती।।[6]

शिवजी द्वारा सती के इस कृत्य को अपने इष्ट प्रभु राम की भक्ति में बाधक माना गया है तथा यही शिव का सती से विलगाव का कारण बना। इस विचलन ने सती को पुनर्जन्म लेने को विवश किया। यथा–

तब संकर प्रभु पद सिरु नावा।
सुमिरत रामु हृदयँ अस आवा।।
एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं।
सिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं।।[7]

तुलसी द्वारा माता सती के माध्यम से जीवन के कठोर झंझावातों में स्त्री के अप्रतिम धैर्य को व्यक्त किया गया है। माता सती ने निजता को अप्रकट व सामाजिक मूल्यों को अक्षुण्ण रखते हुए दुःखद क्षणों को अपने शील गुणों द्वारा सुखद बनाया। शिव द्वारा सती को दक्ष यज्ञ में आग्रह पूर्वक जाने के कारण यह समझाना कि मित्र, स्वामी, पिता और गुरु के घर बिना बुलाए जाना चाहिए लेकिन जहाँ कोई विरोध मानता हो वहाँ जाने से कल्याण नहीं होता। यथा–

भाँति अनेक संभु समुझावा।
भावी बस न ग्यानु उर आवा।।
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बोलाएँ।
नहिं भलि बात हमारे भाएँ।।[8]

परन्तु माता सती द्वारा नीति वचन अवमानना, दक्ष यज्ञ में जाना और देह त्याग करने की घटना एक प्रेरणादायक प्रसंग के रूप में ली जा सकती है।

तजिहउँ तुरत देह तेहि हेतू।
उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू।।
अस कहि जोग अगिनि तनु जारा।
भयउ सकल मख हाहाकारा।।[9]

स्त्री सम्बन्धी शील गुणों से रंच मात्र विचलन के कारण सामाजिक त्रासदी उत्पन्न हुई। अगले जन्म में माता सती द्वारा पर्वतराज हिमाचल और मैना के गृह में पुत्री के रूप में अवतरित होते ही खुशियाँ छा गयीं। तब मैना और हिमाचल अपनी पुत्री के अतिशय प्रेम के वशीभूत होकर विवाह के बारे में निम्न प्रकार से चर्चा करते हैं–

पतिहि एकांत पाई कह मैना।
नाथ न मैं समुझे मुनि बैना।।
जौं घरु बरु कुलु होइ अनूपा।
करिअ बिबाहु सुता अनुरूपा।।
न त कन्या बरु रहउ कुआरी।
कंत उमा मम प्रानपिआरी।।[10]

निष्कर्ष

तुलसी ने मानस में स्त्री को सर्वशक्तिमती मानते हुए उसको सभी रूपों में सम्मानित किया है। स्त्री को पुरुष की पूरक मानते हुए पुत्री और पुत्र में समभाव माना गया है। तुलसी की स्त्री चेतना आदिकाल से लेकर अनादि काल तक सम्पूर्ण जनमानस में अपनी उपादेयता से जन–जीवन को एक दैदीप्यमान पथ पर चलने की प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। पावन श्रीरामचरितमानस हमारे जीवन पथ की पथ–प्रदर्शक है।

सन्दर्भः–

1. श्रीमार्कण्डेयपुराण देवीमहात्म्य अध्या. व श्लो. 1 पृ0 सं0–59
2. तुलसीदास 1/1/1 पृ0 सं0–17 रामचरितमानस
3. तुलसीदास 1/5/1 पृ0 सं0–18 रामचरितमानस
4. तुलसीदास 1/2/16 पृ0 सं0–38 रामचरितमानस
5. तुलसीदास 1/4/18 पृ0 सं0–40 रामचरितमानस
6. तुलसीदास 1/4/56 पृ0 सं0–77 रामचरितमानस
7. तुलसीदास 1/1/57 पृ0 सं0–77 रामचरितमानस
8. तुलसीदास 1/4/62 पृ0 सं0–82 रामचरितमानस
9. तुलसीदास 1/4/64 पृ0 सं0–83 रामचरितमानस
10. तुलसीदास 1/2/71 पृ0 सं0–88 रामचरितमानस